## ?????? ????? ????? ????? (??????) - Lyrics and Translation

1054 Administrator Tue, Jan 18, 2022 History 0 2064

This poem was written in the praise of Guru Gobind Singh Ji by Bhai Nand Lal Ji in Persian poetic form. He was the poet laureate of Guru Gobind Singh's court. He was originally a Hindu Afghan who worked in the Mughal courts. His knowledge was so impressive that Aurangzeb (Ruler of time) insisted such a man should be made a Muslim, after hearing Bhai Nand Lal's interpretation of a Quran verse. Refusing to convert, Bhai Nand Lal thus sought refuge in Anandpur, in the court of Guru Gobind Singh Ji, who on his first vision of the Guru was so impressed by his being that he decided to stay in his court for years. He became a disciple of the Guru Sahib and was the Guru's most favorite poet among the 52 poets he had in his court. He stayed with the Guru for several years. His works are mainly in Persian and Punjabi. Through his writings, one can observe that he shared a unique relationship with Guru Gobind Singh Ji, having poetic works that included passages dedicated to the greatness of Guru Gobind Singh Ji as well direct dialogue with the 10<sup>th</sup> master. His Persian works are so poetic and full of love, devotion, and praise for Guru Sahib Ji.

He wrote a number of works in Persian and other languages. One of these is Ganj Nama or book of treasures. Ganj Nama is written in Persian verse in praise of the ten gurus. There are a total of 160 verses in it. Verses from 105 to 160 are in praise of Guru Gobind Singh Ji.

This is a fairly long poem of 55 couplets, lyrics, and translation of which is included below.

रामित भरमुत गुतु गेर्घोर मंथि धीसरभिरसुत गुतु गेर्घोर मंथि ॥ 105 ॥

ਹੱਕ ਰਾ गੰਜੂਰ गੁਰ गੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਜੁਮਲਾ ਫ਼ੈਜ਼ਨ੍ਰਿਰ गੁਰ गੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 106 ॥

ਹੱ**र ਹੱर ਆगा**ਹ गुठ ग<mark>ੋ</mark>घंरि मंथि साग साग साग गुठ गेघंरि मंथि ॥ 107 ॥

ਬਰ ਦੋ ਆਲਮ ਸ਼ਾਹ ਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਖ਼ਸਮ ਰਾ ਜਾਂ-ਵਾਹ ਹਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 108 ॥ ਫ਼ਾਇਜ਼ੁਲ ਅਨਵਾਰ गुਰ गੋघंਦਿ ਸੰਘਿ रਾਸ਼ਫ਼ੁਲ ਅਸਰਾਰ गुਰ गੋघंਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 109 ॥

ਆਲਮਿੁਲ ਅਸਤਾਰ गੁਰ गੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਅਬਰਰਿਹਮਿਤ ਬਾਰ गੁਰ गੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 110 ॥

भुरघुरु भरघुर गृत गॆघीर मीथ इन्मरु भेमुरु गृत गॆघीर मीथि ॥ 111 ॥

नगं-द्वतेन्न रिग्रित गुत गेर्घीर मीथ द्वैन्न गिर तुर घग्रित गुत गेर्घीर मीथ ॥ 112 ॥

ਹੱマ ਰਾ भਹिघुघ गृत गॆघींर मीथ उन्हांचे भउहुघ गृत गॆघींर मीथि ॥ 113 ॥

ਤੇਸ਼ ਰਾ ਫ਼ੱਤਾਹ ਸੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਜਾਨੋ ਦਲਿ ਰਾ ਰਾਹ ਸੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 114 ॥

मार्गिघ ਅਕਲੀਲ गुरु गेघींर मीथ स्नाधि ਹੱਕ उस्तरील गुरु गेघींर मीथ ॥ 115 ॥

भ्रान्नति उन गिन गुन गिर्घीर मिथा घनउभि उन नेन गुन गिर्घीर मिथा ॥ 116 ॥

ਦਾਵਰ ਆਿਫ਼ਾਕ गੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਦਰ ਦੋ ਆਲਮ ਤਾਕ ਸੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 117 ॥

ਹੱマ ਖ਼ੁਦ ਵੱਸਾਫ਼ ਿ गुਰ गੋघींਦ ਸੰਘਿ ਬਰ ਤਰੀਂ ਐੱਸਾਫ਼ ਿ गुਰ गੋघींਦ ਸੰਘਿ ॥ 118 ॥

भ्रामगां रत याष्टि गुत गॆर्घोर मीथा बुरमी लां घा ताष्टि गुत गॆर्घोर मीथा ॥ 119 ॥

भुरवलां भॅराग्रिगुत गॆर्घीर मंथि ਜਾਨੋ रिल ता ताग्र गुत गॆर्घीर मंथि ॥ 120 ॥

ਲਾ-भरां था-घेमि गुरु गॆघंिंट मंथि घरु रे ਆਲਮ रेमि गुरु गॆघंटि मंथि ॥ 121 ॥ मुलम ਹਮ ਮਹਤ੍ਵਿਮ ਿਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਰੁੱਬਆ ਹਮ ਮਖ਼ਤੂਮ ਿਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 122 ॥

मुरम गुरुर घगेम गिन गेघीर मीथ रुमभत-लढ़गार नेम गिन गेघीर मीथ ॥ 123 ॥

ਖ਼ਾਲਿਸ ਬੇ-रੀਨਾ गुਰ गੋघंਦਿ ਸੰਘਿ ਹੱਵ ਹੱਵ ਆਈਨਾ गुਰ गੋघंਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 124 ॥

ਹੱ**र ਹੱर ਅੰ**ਦੇਸ਼ गुਰ गੋघंरि मंथि घारमाग रहदेम गुठ गॆघंरि मंथि ॥ 125 ॥

भरतभुल-ढ़ँसाल गुत गेघींर मीथ भुतिष्टभु ल-भुउलाल गुत गेघींर मीथ ॥ 126 ॥

रातभुँਲ-रॅताभ गुत गेर्घीर मंथि ਰਾਹभुँਲ-ਰੱਹਾभ गुत गेर्घीर मंथि ॥ 127 ॥

ਨਾਇਮੁਲ-ਮੁਨਆਮ गुਰ गੋघरि मंथि ਫ਼ਾਹਮੁਲ-ਫ਼ੱਹਾਮ गुਰ गੋघरि मंथि ॥ 128 ॥

राष्टिभे थार्ष्टिरा गुत गेर्घार मंथि द्वतक्षे द्वतक्षेरा गुत गेर्घार मंथि ॥ 129 ॥

ਫ਼ੈਜ਼ ਸੁਬਹਾਨ ਜ਼ਾਤ ਿਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਨੂਰਹਿੱਕ ਲਮਆਤ ਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 130 ॥

माभिक्तिति गित्र गिर्वाट मिथि उर-घीं चित्रिकाभिगुत गेर्घीट मिथि ॥ 131 ॥

हामद्वार्ता साउगित गेघींर मंथि हामित अस घतराउगित गेघींर मंथि ॥ 132 ॥

रारभारि हमद्धि गुरु गेघीर मीथ राभहरु जन्न सुउद्धि गुरु गेघीर मीथि ॥ 133 ॥

तान्निति वृष्टि गुरु गेर्घोट मीथ भमउगिर एर रुष्टि गुरु गेर्घोट मीथ ॥ 134 ॥ भ्रार-घेमि थाटि गुत गेघींर मीथ भुरघल लास लालाटि गुत गेघींर मीथि ॥ 135 ॥

रार्राति गत रात गत गर्वार मंथि घेरमां-ता जात गत गर्वार मंथि ॥ 136 ॥

मानि भमनुर गुरु गेघरि मंथि नुभला ढ़ै ਜ਼ੋ ਜੂर गुरु गेघरि मंथि ॥ 137 ॥

मनदनां ना उपन गृन गेर्घाट मंथि घन उनीं भिलनान गृन गेर्घाट मंथि ॥ 138 ॥

लमत रुरमी ताभि गृत गेघीर मीथ हामीढ़ि टिरताभ गृत गेघीर मीथि ॥ 139 ॥

ਉੱਮ ि रॅंटम घराति गुत गेघींट मीथ गामीला घतराति गुत गेघींट मीथ ॥ 140 ॥

रस्त रुस्तउ थेम गित गघरि मंथि टितरिजार भीरेम गित गघरि मंथि ॥ 141 ॥

उमिल ਉਲही अपरि गुठ गेघीर मीथ चारत चारारि गुठ गेघीर मीथ ॥ 142 ॥

उभ्रउ घाला ਜ਼ੇਰ गित गेर्घीर मंथि ਲਾਮਵਾਨੇ मैत गुत गेर्घीर मंथि ॥ 143 ॥

घठ उठ भन्न गठ रस्ठ गुठ गॆघींस मीथ नाइसिकी मस्ठ गुठ गॆघींस मीथ ॥ 144 ॥

ਆਲਮੇ ਰੋਸ਼ਨ ਜ਼ਹਿਰ गੋघरि मंथि ਜਾਨੋ ਦਲਿ गुਲਸ਼ਨ ਜ਼ਹਿਰ गੋघरि मंथि ॥ 145 ॥

ਰੂਜ਼ ਅਫ਼ਜ਼ੂੰ ਜਾਹਾ ਿਸੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਜ਼ੇਬਤਿਖ਼ਤੋ ਸਾਹਾ ਿਸੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 146 ॥

भुतमुरु-राउँतिगित गेघरि मंथि घीतम्गित जैत गुत गेघरि मंथि ॥ 147 ॥ ਜੁਮਲਾ ਦਰ ਫ਼ਰਮਾਨ ਿਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਬਰ ਤਰ ਆਮਦ ਸ਼ਾਨਿ ਹਿਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 148 ॥

ਹਰ ਦੋ ਆਲਮ ਖ਼ੈਲ ਿਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ਜੁਮਲਾ ਅੰਦਰ ਜ਼ੈਲ ਿਹੁਰ ਸੋਬੰਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 149 ॥

हाउधि ह्याच गुतु गेर्घीर मंथि ढ़ाउिंगि गत घाघ गुत गेर्घीर मंथि ॥ 150 ॥

ਸ਼ਾਮੀਨਿ-ਨ-ਅਸ਼ਫ਼ਾਵ गुਰ गੋघींਦ ਸੰਘਿ ਵਾਮੀਨਿ-ਨ-ਅਖ਼ਨਾਵ गुਰ गੋघींਦ ਸੰਘਿ ॥ 151 ॥

ਰੂਹ ਦਰ ਹਰ ਜਸਿਮ गुਰ गੋघींਦ मीथ ਨੂਰ ਦਰ ਹਰ ਚਸ਼ਮ गुਰ गੋघींਦ मीथ ॥ 152 ॥

ਜੁਮਲਾ ਰੋਜ਼ੀ ਖ਼ਾਰ गिਰ गੋघरि मंथि ਬੈਜ਼ਹਿੱਕ ਇਮਤਾਰ गੁਰ गੋघरि मंथि ॥ 153 ॥

घमिउ गृहउ गराष्टि गुरु गॆघीर मीथ गृहउ ग्रम मैराष्टि गुरु गॆघीर मीथि ॥ 154 ॥

भ्रार्गुघि मिराष्टि गुरु गॆघींर मीथि भ्रॅभम दमढ़ थैराष्टि गुरु गॆघींर मीथि ॥ 155 ॥

घਰ ਦੋ ਆਲਮ ਦਸਤ ਿਹੁਰ गੋघंਦਿ ਸੰਘਿ ਜੁਮਲਾ ਉਲਵੀ ਪਸਤ ਿਹੁਰ गੋघंਦਿ ਸੰਘਿ ॥ 156 ॥

ਲਾਅਲ मगे गुरुग्भि गुरु गेघंरि मंथि रागरारिकामिगुर गेघंरि मंथि ॥ 157 ॥

रभउतीं सिमगार्ति गुत गेघींर मीथ वेसा-चीर्ताभ्रहार्ति गुत गेघींर मीथि ॥ 158 ॥

माष्टिल लास हितलाभि गुरु गेघींर मंथि भ्राचि थाचि लाचराभि गुरु गेघींर मंथि ॥ 159 ॥

घार नातम द्वरिष्टि गुत गेर्घीर मंथि द्वतरिषु घत थाटि गुत गेर्घीर मंथि ॥ 160 ॥

## Online URL:

https://www.articlediary.com/article/रूग्मर्गे-भंगुर-गृतु-गृंघीर-मंथि-ढार्गमी-lyrics-and-translation-1054.html